प्रारंभिक वक्तव्य

माननीय सदस्यगण,

चतुर्थ झारखण्ड विधान के एकदिवसीय सप्तदश (विशेष) सत्र में आप सभी का हार्दिक अभिनन्दन। लगभग 19 वर्षों की लंबी प्रतीक्षा के बाद झारखण्ड की सर्वोच्च विधायी संस्था और सबसे बड़ी लोक पंचायत को अपना स्थायी भवन प्राप्त हुआ है। भारत के यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के कर कमलों से कल हुए उद्घाटन के बाद आज झारखण्ड विधान सभा के इस भव्य भवन में हमलोग उपस्थित हैं। चार वर्षों के अथक परिश्रम के बाद झारखण्ड के लोकप्रिय मुख्यमंत्री श्री रघुवर दास के सपनों के साकार होने का गौरवशाली क्षण था, कल का दिन, जब इस भव्य भवन का उद्घाटन हुआ। आज से चार वर्ष पूर्व इसकी नींव डाली गई थी। बुनियाद रखे जाने के चार वर्षों के अथक और अनवरत परिश्रम के बाद इस भव्य भवन के निर्माण का सपना साकार हुआ है। इसके लिए मैं माननीय मुख्यमंत्री जी सहित भवन निर्माण एवं आवास विभाग तथा इससे जुड़े

प्राधिकार के समस्त उच्चाधिकारियों, एक–एक कर्मियों के साथ–साथ उन सभी श्रमिकों के प्रति भी अपना आभार इस सदन के माध्यम से व्यक्त करता हूँ जिन्होंने रात–दिन एक करके भवन निर्माण के इस सपने को साकार करने का काम किया है। मैं पुनः एक बार माननीय प्रधानमंत्री जी के प्रति अपना आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होंने अपने व्यस्त समय में से थोड़ा सा वक्त निकालकर इसके उद्घाटन के कार्य को सम्पन्न किया है।

माननीय सदस्यगण, किसी भी व्यवस्था की भव्यता का पैमाना वहाँ के निर्माणों की भव्यता से नहीं लगाया जाता, यह भव्यता तभी सार्थक होती है जब हमारा आचार–विचार और व्यवहार इस भव्यता के अनुरूप हो। मैं जानता हूँ कि झारखण्ड विधान सभा के तमाम सदस्यगण विधायी, वित्तीय एवं अन्य कार्यों में अपने आचरण की भव्यता का प्रदर्शन अब तक करते आए हैं। हमारा अब तक का एक–एक पल का प्रयास झारखण्ड के जन–जीवन में नयी ऊर्जा का संचार करने के निमित होता आया है। अनेक संकल्पों को हमने अपने शौर्य से साकार

करने का काम किया है। फिर भी हमारी उन्नति की यात्रा अभी पूरी नहीं हुई है। झारखण्ड को देश के अनेक अन्य तमाम विकसित राज्यों की श्रेणी में खड़ा करने के लिए हमें और अधिक श्रम करने की आवश्यकता है। हमारे मार्ग में अनगिनत कठिनाईयां आएंगी, फिर भी हम आज के दिन यह संकल्प लें कि आने वाले तमाम निर्मम समय का सामना हम प्राणपन से करेंगे और झारखण्ड को उन्नति के शिखर पर ले जाने में कामयाब होंगे। आपको विदित होगा कि झारखण्ड विधान सभा का पिछला सत्र चंद्रयान के सफल प्रक्षेपण के साथ शुरू हुआ था और यह सत्र ऐसे समय में हो रहा है जब चांद से कुछ कदमों की दूरी पर हमारा सफर रूक गया। हमारे तमाम वैज्ञानिक जो भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संस्थान से जुड़े हैं, इसकी सफलता के लिए अभी भी जी–जान से जुटे हुए हैं। उनकी कोशिश है कि हमारा यह मिशन सफल हो। यह सही है कि सफलता और विफलता एक ही सिक्के के दो पहलू हैं और विज्ञान हमेशा प्रयास और प्रयोग के सिद्धांतों पर आगे

बढ़ता है। हमारे प्रयास या प्रयोग को लगातार कोशिशों से भविष्य में निश्चित ही कामयाबी मिलेगी, ऐसी उम्मीद हमें है।

दुनियां चांद को छूने की बात करती है और भारत का सपना शुरू से चांद के पार जाने का रहा है। कुछ वर्ष पूर्व हमारा मंगलयान का सफर कामयाब हुआ था, हमारा चांद का सफर भी कामयाब होगा क्योंकि हमारा विश्वास है, इस मूल मंत्र में कि प्रयास करने वाले हमेशा कामयाब होते हैं। हम भी एक दिन कामयाब होंगे। हमारे इस प्रयास को दुनियाभर में सराहा गया है। आज के अवसर पर मैं इस सदन की ओर से भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संस्थान के तमाम वैज्ञानिकों को उनके प्रयास और प्रयोग की इस अभिनव श्रृंखला के लिए अपनी हार्दिक बधाई प्रेषित करता हूँ। आज देश के अन्य हिस्सों के साथ–साथ झारखण्ड की सवा तीन करोड़ जनता भी उनके साथ खड़ी है।

हमारा यह सत्र रक्षा बंधन, जन्माष्टमी, गणेश पूजा और जनजातीय पर्व करमा को मनाने के बाद शुरू हुआ है। दो दिन पूर्व

इस्लाम धर्मावलम्बियों के द्वारा शहादत के पर्व मुहर्रम को भी मनाया गया है। भारत का संस्कार सादगी और समर्पण का रहा है। हम इस संस्कार और परम्परा के प्रति नतशीष होकर अपनी श्रद्धा भी निवेदित करते हैं।

आज के अवसर पर मैं इस तथ्य का भी उल्लेख करना चाहता हूँ कि विगत दिनों स्विटजरलैंड में आयोजित बैडमिटंन के विश्व चैम्पियनशिप में हमारे देश की बेटी पी.वी. सिंधु ने गोल्ड मेडल प्राप्त कर न केवल इस देश का मान बढ़ाया है, वरन उन्होंने इस क्षेत्र में कीर्त्तिमान स्थापित करने वाली पहली भारतीय महिला के रूप में भी अपना नाम दर्ज किया है। इसके पूर्व भी सिंधु ने अनेक सम्मान प्राप्त किए हैं। हम उनकी इस अभूतपूर्व सफलता के लिए उन्हें बधाई देते हैं। इसी तरह चेक गणराज्य में आयोजित 300 मीटर दौड़ की प्रतियोगिता में भारत की दूसरी बेटी हिमा दास की स्वर्णिम उपलब्धि भी हमें गौरवान्वित करती है। जमशेदपुर की कोमोलिका ने स्पेन में आयोजित विश्व युवा तीरंदाजी का खिताब जीतकर भी हमारा सम्मान

बढ़ाया है। हम अपनी इन तीनों बेटियों की सफलता के लिए उन्हें हार्दिक बधाई देते हैं।

माननीय सदस्यगण, आज का यह विशेष सत्र झारखण्ड की माननीया राज्यपाल महोदया के द्वारा विशेष रूप से आहूत किया गया है। ऐसे अवसर कम आते हैं जब संविधान के अनुच्छेद 175 (1) के अधीन विधान सभा के सत्रों का आह्वान किया जाए। झारखण्ड विधान सभा के अबतक के इतिहास की यह पहली घटना है जब संविधान के इस प्रावधान के अधीन इस सत्र का आयोजन किया जा रहा है। इस क्रम में माननीया राज्यपाल महोदया द्वारा जो संदेश आपके लिए मुझे प्राप्त हुआ है, उसे मैं आपलोगों के बीच में पढ़कर सुना देना चाहता हूँ। उन्होंने इस सत्र के आह्वान के साथ–साथ जो संदेश दिया है, वह इस प्रकार है।

संदेश

''भारत का संविधान के अनुच्छेद 175 के खण्ड (1) के द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, मैं, द्रौपदी मुर्मू, झारखण्ड की राज्यपाल, इसके द्वारा झारखण्ड विधान सभा को दिनांक–13 सितम्बर, 2019 को 11.30 बजे पूर्वाह्न में संबोधित करना चाहती हूँ और इस हेतु झारखण्ड विधान सभा के सभा वेश्म, राँची में सदस्यों की उपस्थिति चाहती हूँ।

राँची, दिनांक–10 सितम्बर, 2019 ई0।

ह0/– द्रौपदी मुर्मू
झारखण्ड की राज्यपाल।

विदित है कि विधान सभा के भीतर माननीया राज्यपाल की उपस्थिति एक महत्वपूर्ण घटना होने के साथ–साथ गौरव का क्षण भी होता है। हमारी संसदीय व्यवस्था में राज्यपाल के पद को प्रतिष्ठा का सूचक माना गया है। इनके प्रति श्रद्धा का प्रदर्शन हमारा दायित्व है।

भारत की न्यायिक प्रक्रिया में भी इस संवैधानिक व्यवस्था को स्वीकार किया गया है। इस अवसर पर हम अपने आचरण का ऐसा कीर्त्तिमान स्थापित करें, जो हमेशा के लिए उदाहरण बने। अपने आचरण में ऐसी कोई कमी हमें नहीं आने देनी चाहिए, जो गलत परंपरा का हिस्सा बने और जिसके लिए हमारी आलोचना हो। माननीया राज्यपाल महोदया अपने अभिभाषण के अवसर पर अपने संवैधानिक दायित्वों को पूरा करती हैं। आप विदित हैं कि हमारा संविधान हमारे पूर्व पुरुषों द्वारा निर्मित है, जिसे देश की तमाम जनता ने अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित किया है। ऐसे में माननीया राज्यपाल महोदया के प्रति प्रदर्शित किया गया हमारा सम्मान हमारे संविधान के प्रति प्रदर्शित सम्मान का प्रतीक है। थोड़ी देर के बाद माननीया राज्यपाल महोदया आपलोगों के बीच अपने अभिभाषण के लिए उपस्थित होंगी। मैं उनकी आगवानी के लिए थोड़ी देर के लिए इस सदन के बाहर जाऊँगा। सदन से मेरे बाहर रहने और राज्यपाल महोदया के अभिभाषण के बाद उन्हें विदा करने के लिए जब मैं जाऊं, उस अवधि में भी आप सदन में

शालीनता का प्रदर्शन करेंगे और व्यवस्था का अनुपालन करेंगे, ऐसी उम्मीद मैं आप सभी से करता हूँ। राज्यपाल महोदया के आगमन के समय और उनके अभिभाषण के दौरान भी आप के शालीन आचरण की अपेक्षा मैं आप सभी से करता हूँ। उनके अभिभाषण को आपलोग धैर्यपूर्वक सुनेंगे, इसी कामना के साथ मैं आपलोगों से थोड़े समय के लिए विदा ले रहा हूँ।